आलोचक ने लिखा है— "जिस प्रकार बिच्छु का डंक उसकी पूँछ में होता है ठीक उसी प्रकार कहानी का सारा रहस्य, उसका समस्त प्रभाव इसके अन्त में निहित रहता है।"

कहानी का शीर्षक औत्सुक्योपादक, लघु और नवीन होना चाहिए। शीर्षक का कथावस्तु से सम्बन्ध होना चाहिए। शीर्षक की सफलता पर कहानी की सफलता निर्भर रहती है।

2) चरित्र-चित्रण—

कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्वपूर्ण स्थान होता है। चरित्र-चित्रण का सम्बन्ध पात्रों से होता है। प्रेमचन्द जी के शब्दों में— "घटनाओं का कोई स्वतंत्र महत्व नहीं होता। उनका महत्व केवल पात्रों के मनोभावों को व्यक्त करने की दृष्टि से ही है" कहानी किसी न किसी चरित्र को ही आधार बनाती है। कहानी में कभी घटना पर दृष्टि पहले जाती है और कभी चरित्र पर। चरित्र-चित्रण में सबल और निर्बल दोनों पक्ष के चरित्र होते हैं। कहानी में चरित्र का महत्वपूर्ण स्थान है। कहानी के सबल और निर्बल पात्र के चित्रण से ही कहानी की स्वाभाविकता सुरक्षित रहती है। प्रायः कहानी में वर्गगत और व्यक्तिगत दो प्रकार के चरित्र होते हैं। इनमें कोई देवपात्र होता है तो कोई असुर और कोई मानव। चरित्र-चित्रण सहज स्वाभाविक ढंग से विकसित होना चाहिए और इस विकास में अन्तर्द्वन्द्व और आन्तरिक संघर्ष का चित्रण महत्वपूर्ण है

3) कथोपकथन अथवा संवाद—

यह कहानी का प्रमुख तत्व है। संवाद कहानी में चरित्र का चित्रण, वर्णन में रोचकता तथा प्रवाह और कथानक को विकसित करते हैं। संवाद कहानी में वातावरण का निर्माण करने में समर्थ होते हैं। कथोपकथन

के माध्यम से पात्र का व्यक्तित्व जिस प्रभावोत्पादकता से उजागर होता है, वैसा किसी दूसरे साधन से संभव नहीं है। इससे ही कहानी स्वाभाविकता और विश्वसनीयता आती है। संवादों की प्रकृति ऐसी होनी चाहिए जो सक्रियता और सजीवता के साथ - साथ कहानी में सौन्दर्य - विधान करने की क्षमता रखता हो।

अनेक कहानियाँ बिना संवादों के भी लिखी गयी हैं जैसे जोशी जी की 'प्लेटफॉर्म' कहानी आज भी नये - नये प्रयोग हो रहे हैं।

4) वातावरण - देशकाल —

वातावरण और देशकाल कहानी का वह प्रमुख तत्त्व है जिससे कहानी में स्वाभाविकता और सजीवता आती है। इस तत्त्व के अन्तर्गत कहानी में देशकाल का चित्रण वेशभूषा, साज- सज्जा, रीति-रिवाज, रहन - सहन, आचार- विचार, प्रकृति वर्णन, नगर-वर्णन, ऋतु वर्णन, काल आदि का समावेश होता है। वातावरण कहानी में पाठक की इन्द्रियों को उद्दीप्त करता है, सौन्दर्यानुभूति की वृत्ति को संतुष्ट करता है। वातावरण वर्णन से कहानी में आकर्षण उत्पन्न होता है। जयशंकर प्रसाद की कहानी 'पुरस्कार' का आरम्भ दर्शनीय है — "आर्द्रा नक्षत्र आकाश में काले - काले बादलों की घुमड़ जिसमें दुन्दुभी का गम्भीर घोष, प्राची के एक निरभ्र कोने में स्वर्ण झाँकने लगा। नगर तोरण से जयघोष हुआ, भीड़ में गजराज का चामरधारी शुण्ड उन्नत दिखाई दिया और उत्साह का समुद्र हिलोरें लेने लगा।" वातावरण एवं देशकाल के अन्तर्गत संकलन - त्रय स्थान, समय और कार्य की एकता का समावेश होता है किन्तु आज की कहानी में इनका प्रयोग अनिवार्य नहीं माना जाता किन्तु कार्य की एकता का सिद्धान्त अत्यावश्यक है।

5) भाषा- शैली —

कहानी की भाषा सरल, बोधगम्य और जनसाधारण की भाषा होनी चाहिए। भाषा वातावरण, पात्र और परिस्थिति के अनुकूल

Scanned with CamScanner

होनी चाहिए। सरल, व्यावहारिक, स्वच्छ, शुद्ध, सरस और गंभीर भाव स्थलों पर परिवर्तनशील भाषा कहानी के सौन्दर्य की वृद्धि करती है। कहानी की सफलता उसकी पर निर्भर करती है। सरस वर्णन शैली कहानी को प्रभावपूर्ण बना देती है। शैली आकर्षक, हास्य-व्यंग्य, विनोदपूर्ण और लोकोक्ति, मुहावरों से युक्त हो तो आकर्षण उत्पन्न करती है। कहानी की कई शैलियाँ प्रचलित हैं — आत्मचरित शैली, वर्णनात्मक शैली, संवादात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, डायरी शैली, मिश्र शैली इत्यादि। आधुनिक कहानी में नाटकों की सी सजीवता और कलात्मकता उपेक्षित है जो शैली की श्रेष्ठता और सफलता पर ही निर्भर है।

6) <u>उद्देश्य</u> —

कहानी का अन्तिम तत्व उद्देश्य है। साहित्य की हर विधा सोद्देश्य ही होती है अतः हर कहानी का भी कोई न कोई उद्देश्य होता है। मनोरंजन के साथ सोद्देश्यपूर्ण कहानी ही सफल कहानी मानी जाती है। कहानी का उद्देश्य स्पष्ट, व तथा सार्थक होना चाहिए। अधिकांशतः कहानियों में उद्देश्य व्यंजित होता है पर कुछ कहानियों में यह गूढ़ भी होता है। कुछ-कुछ कहानी का उद्देश्य उसके अन्तिम वाक्य में निहित होता है। उद्देश्य कहानी सिर्फ हमारी समस्याओं का समाधान नहीं करती। कहानी हमारे जीवन में कभी मार्ग-दर्शन भी करती है और यही कहानी की सफलता है।

Scanned with CamScanner